

श्रीः  
श्रीमते रामानुजाय नमः  
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः  
श्रीगुरुपरनपुराधीशाय श्रीकृष्णाय परब्रह्मणे नमः

श्री मेल्लडुर् नारायणभट्टतिरेः कृतिषु  
॥ श्रीमन्नारायणीये पञ्चषष्टितमं दशकम् ॥

*This document has been prepared by*

*Sunder Kidāmbi*

*with the blessings of*

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

*His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam*

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

## ॥ শ্রীমন্নारायणीये पञ्चषष्टितमं दशकम् ॥

গোপীসমাগমনরর্ণনম্

গোপীজনায কথিতং নিযমারসানে

মারোৎসরং ৎরমথ সাধযিতুং প্রবৃত্তঃ।

সান্দ্রেণ চান্দ্রমহসা শিশিরীকৃতশে

প্রাপুরযো মুরলিকাং যমুনানান্তে ॥ 65.1 ॥

সম্মূর্ছনাভিরুদিতস্বরমণ্ডলাভিঃ

সম্মূর্ছযন্তমখিলং ভুরনান্তরালম্।

ৎরদ্রেণুনাদমুপকর্ণ্য রিত্তো তরুণ্য -

স্তভাদৃশং কমপি চিত্তরিমোহমাপুঃ ॥ 65.2 ॥

তা গেহকৃত্যনিরতাস্তনযপ্রসক্তাঃ

কান্তোপসেরনপরাশচ সরোরুহাক্ষ্যঃ।

সর্ং রিসৃজ্য মুরলীররমোহিতাস্তে

কান্তারদেশমযি কান্ততনো সমেতাঃ ॥ 65.3 ॥

কাশ্চিন্নিজাঙ্গপরিভূষণমাদধানা

রেণুপ্রণাদমুপকর্ণ্য কৃতার্ধভূষাঃ।

ৎরামাগতা ননু তথৈর রিভূষিতাভ্য -

স্তা এর সংরুচিরে তর লোচনায ॥ 65.4 ॥

হারং নিতম্বভুরি কাচন ধারযন্তী

কাঞ্চীং চ কণ্ঠভুরি দের সমাগতা ৎরাম্।

हारिंरमाञ्जघनस्य मुकुन्द तुभ्यं  
र्यक्तं वभाष ईर मुक्कमुथी रिशेषां ॥ 65.5 ॥

काचिं कुचे पुनरसज्जितकण्ठुलीका  
र्यामोहतः पररधुभिरलक्ष्यमाणा।  
ंरामायथौ निरूपमप्रणयातिभार -  
राज्याभिषेकरिधये कलशीधरेर ॥ 65.6 ॥

काश्चिं गृहां किल निरेतुमपारयन्त्य -  
ञ्चामेर देर हृदये सुदृढं रिभार्य।  
देहं रिधुय परचिंसुखरूपमेकं  
ंरामारिषन् परमिमा ननु धन्यधन्याः ॥ 65.7 ॥

जाराअना न परमाअतया अरन्त्या  
नार्यो गताः परमहंसगतिं ऋणेन।  
तं ंरां प्रकाशपरमाअतनुं कथञ्चि -  
चित्ते रहन्नमृतमश्रममश्रुरीय ॥ 65.8 ॥

अभ्यागताभिरभितो ब्रजसुन्दरीभि -  
र्मुक्कस्मितार्द्रदनः करुणारलोक्री।  
निस्सीमकान्तिजलधिञ्जुमरेक्ष्यमाणो  
रिंशैरकहृदय हर मे परनेश रोगान् ॥ 65.9 ॥

॥ इति श्रीमन्नारायणीये पञ्चषष्टितमं दशकं समाप्तम् ॥